iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology



INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 14 **Issue:** II **Month of publication:** February 2026

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2026.77434

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 14 Issue II Feb 2026- Available at www.ijraset.com

पर्यावरण संरक्षण में जनजातियों की भूमिका

डॉ कविता मुकाती
सहायक प्राध्यापक (प्राणीशास्त्र)
शासकीय महाविद्यालय जुन्नारदेव जिला छिंदवाड़ा (म. प्र.)

सार: सभ्यता की शुरुआत से ही जनजाति लोग अपने आसपास के प्राकृतिक आवास के स्थान और उसके आसपास की जैव विविधता का संरक्षण करते आ रहे हैं। जनजाति या जिन्हें हम स्वदेशी लोग कह सकते हैं के द्वारा पौधों का उपयोग जो की जड़, कंद, प्रकंद, बीज, फल कृषि औषधिय और बागवानी के रूप में करते हैं। इस प्रकार जंतुओ का उपयोग वह भोजन और सुरक्षा के लिए करते है पर्यावरण के अंतर्गत पौधों और जंतुओं का संरक्षण इन जातियों के द्वारा किया जाता है। जनजाति लोगों के द्वारा एंटीडोट के रूप में पौधों का उपयोग सांप एवं बिच्छू के काटने पर किया जाता है। इसी के साथ कुछ पौधे का उपयोग वर्षों से अस्थि उपचार , घांवो को भरने, गठिया की देखभाल के लिए और गर्भपात या मासिक धर्म की समस्याओं की देखभाल के लिए किया जाता है।

मुख्य बिंदु: पौधे, जंतु, जैव विविधता, संरक्षण, जनजाति लोग

I. प्रस्तावना

भारतीय वन्यजीव संरक्षण पहल में शहरी निवासियों के बजाय स्थानीय जनजातीय समुदायों को शामिल किए जाने की जरूरत है, ताकि मनुष्यों और पशुओं के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को सुनिश्चित किया जा सके। पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए पर्यावरण का संरक्षण और उसका सतत प्रबंधन एक प्रमुख चिंतन का विषय है। पर्यावरण उन्नयन और पर्यावरणीय जीवों की हानि सतत विकास में एक गंभीर खतरे का कारण है। आज के समय में मानव के द्वारा जंगलों की अंधाधुंध कटाई अपने निजी स्वार्थ जैसे आवास औद्योगिकरण और भोजन के लिए की जाती है। वहीं पर जनजाति लोग अपने मूल निवास जो जंगलों में रहना पसंद करते हैं तथा अपने आसपास के वातावरण को संरक्षित करने में लगे रहते हैं।

विभिन्न देशों में रहने वाले जनजाति लोगों को किस नाम से जाना जाता है उसकी सारणी यहां प्रदर्शित की जा रही है।

S. No.	Name of country	Indigenous Tribe
1	Australia	Aborigines
2	Artic Nation	Eskimos
3	Bangladesh	Hill Tribes
4	Brazil	Apinaye Indians
5	Central Africa	Bororo People
6	Western Africa	Pygmy Culture
7	India	Scheduled Tribe
8	New Zealand	Maoris
9	Namibia	Bushmen San
10	Niger	Tuanag Nomad
11	Kenya	Maasai and Samburu people
12	Thailand	Karan People

स्रोत: एनॉन 8 ("एटलस ऑफ एनवायरनमेंट" (1992), डब्ल्यूडब्ल्यूएफ, ऑक्सफोर्ड पब्लिकेशन, ऑक्सफोर्ड, लंदन)

©IJRASET: All Rights are Reserved

II. जनजातीय लोगों द्वारा पौधों के उपयोग के अनूठे पहलू

जनजातीय लोग पौधों का उपयोग कुछ अनूठी विशेषताओं के साथ करते है। अक्सर कई पौधों को एक ही उद्देश्य के लिए नियोजित किया जाता है, फिर भी पौधों के अन्य वर्गों में संभावित उपयोगी मूल्य हो सकते हैं।

उदाहरणके लिए ब्रिडेलिया रेटुस (आसन), कैन्थियमडीकोकम (अरसुल),फ़िक्यूस रेसमोसा (उम्बर), मधुकालोंगिफोली (मोहफुल), फाइलेन्थसएम्ब्लिका (एवला), स्क्लीचेराओलियोसा (कुसुम्ब) का उपयोग लगभग विशेष रूप से उनके खाद्य फलों और बीजों के लिए किया जाता है

औषधीय पौधों पर जनजातियों का ज्ञान हजारों वर्षों से आदिवासी समूहों ने पौधों की औषधीय शक्तियों को पहचाना और उनका उपयोग किया है। पुराने सदस्य औषधीय पौधों के साथ-साथ कुछ जानलेवा विकारों को ठीक करने के लिए दवाओं के बारे में भी काफी जानकारी रखते हैं(अल्वेस आर.आर.एन.और रोजा आई.एल.2013)। पौधे आदिवासियों की एकमात्र या संयुक्त औषधि हैं। एक ही पौधे का उपयोग विभिन्न विकारों के लिए किया जा सकता है: उदाहरण के लिए कैलोट्रोपिस गिगेंटिया का उपयोग वर्मीसाइड और सीने में दर्द के लिए किया जाता है, सेंटेला एशियाटिका का उपयोग स्त्री रोग संबंधी समस्याओं और पीलिया के लिए किया जाता है, डोडोनाए विस्कोसा का उपयोग सिरदर्द, पेट दर्द और बवासीर के लिए किया जाता है, अल्बिजिया लेबेबेक को कैसिया फिस्टुला और यूफोरबिया हिर्टा के साथ मिलाकर मूत्र रोग के लिए उपयोग किया जाता है। प्रत्येक जनजाति का जड़ी-बूटियों की कटाई के साथ-साथ दवाओं के निर्माण का अपना तरीका होता है। दवा की खुराक और अवधि रोगी की उम्र और रोग की गंभीरता द्वारा निर्धारित की जाती है (सेनगुप्ता एस.1991)।

III. जनजातीय लोगों द्वारा संरक्षित पशु

आदिवासी लोग आध्यात्मिक, औषधीय, भोजन और मिथक उद्देश्य के आधार पर विभिन्न घरेलू और वन्यजीव जानवरों का संरक्षण करते हैं। जानवरों को या तो प्रजनन तकनीक या कौशल प्रबंधन (सिंह आर. के. और अन्य 2010) का उपयोग करके पालन किया जाता है। जनजातियों के इस कौशल प्रबंधन के कारण वन पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न घरेलू और साथ ही वन्यजीव जानवरों का संरक्षण किया जाता है। इस प्रकार स्वदेशी लोगों का पारंपरिक ज्ञान स्थिर पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में मदद करता है। जानवरों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।



स्त्रोत:- आदिवासी देव देवता बाय कैलाश धूम

A. मधुमक्खी *(एपिस इंडिका)*

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में मधुमक्खी प्रजातियों की एक विशाल श्रृंखला पाई जा सकती है। मधुमक्खी पालन पद्धति का उपयोग करके आदिवासी लोग विभिन्न प्रकार की मधुमक्खी प्रजातियों की खेती करते हैं। उन्होंने स्थानीय बांस से एक शहद का बक्सा बनाया, एक रेंगने वाला जाल, एक चाकू और दस्ताने जो मधुमक्खियों को पालने के लिए बाजार में आसानी से उपलब्ध हैं। एक बाल्टी, एक छलनी, दो प्लास्टिक के बक्से, दो चाकू और एक रस्सी से शहद निकालने की किट बनती है, जिसमें बुनियादी और अधिक विशेषज्ञ सामग्री दोनों शामिल हैं। चूंकि निष्कर्षण प्रक्रिया में आग का उपयोग नहीं किया जाता है, इसलिए न तो मधुकोश और न ही मधुमक्खियों को नुकसान होता है। मधुकोश के भंडारण खंड से मधुमक्खियों को हटाने के लिए हाथों का उपयोग किया जाता है। अंत में, शहद से भरे हिस्से, जो छत्ते का लगभग 20% होता है, को चाकू से काटा जाता है और एकत्र किया जाता है। इसके अतिरिक्त, मधुकोश के शेष भाग को सौंदर्य प्रयोजनों के लिए अछूता रखा जाता है। मधुमक्खियां अगले 15 से 20 दिनों में छत्ते में शहद भर देंगी, जिससे एक और शहद निकालने की अनुमति मिलेगी (नोनाका के. जापान: 2005)। ग्राम सभा आदिवासी लोगों से शहद खरीदती है या सीधे शहर में बेचती है।

B. मयूर *(पावोक्रिस्टैटस)*

मोर एक वन पारिस्थितिकी तंत्र में आकर्षक पक्षियों में से एक है। आदिवासी लोगों विशेषकर गोंड जनजातियों में इस पक्षी के बारे में कई मिथक और धार्मिक मान्यताएं हैं। इन जनजातियों की मान्यता है कि मोर वर्षा ऋतु का सूचक होता है। इसलिए, मोर को भगवान "वरुणदेवता" का प्रतीक माना जाता है और मोर पंखों के बंडल कई आदिवासी देवताओं की विशेषता हैं (ग्रेवाल बी और फिस्टर 2004)।

C. भारतीय कोबरा *(नाजा नाजा)*

भारतीय कोबरा न्यूरोटॉक्सिक जहरीला सांप है। जनजातियों का मानना है कि सांप जीवित रहने में रुचि रखते हैं। अगर लोग आंदोलन में आगे बढ़ते हैं, तो सांप को खतरा महसूस होता है और वह हमला कर सकता है। हालाँकि, आदिवासी लोग साँप की पूजा करने के लिए उपयोग किए जाते हैं क्योंकि वे "नागपंचमी" त्योहार मनाते हैं। उनका मानना था कि भारतीय कोबरा भगवान "महादेव" का प्रतीक है।

D. कछुआ *(टेस्टूडो)*

आदिवासी लोगों की जीवन शैली में कछुआ महत्वपूर्ण भूमिका दिखाता है। आदिवासी लोग कछुए को अपने जलाशयों जैसे कुएं या छोटे तालाबों में रखते थे। एक कछुआ सर्वाहारी होता है क्योंकि वे खाते हैं
फाइटोप्लांकटन, ज़ोप्लांकटन, सूक्ष्मजीव आदि। इसके कारण जल निकाय बहुत अच्छी तरह से शुद्ध होते हैं। आदिवासी लोग कछुए को जलस्रोतों का शोधक मानते है (प्रकाश एस यादव 2020)। इसके अलावा, गोंड और मड़िया जनजातियों को कछुआ को देवी "लक्ष्मी" का प्रतीक माना जाता है।

E. कुत्ता *(कैनिस ल्यूपस फेमिलेरिस)*

कुत्ता एक ईमानदार पालतू जानवर है। आदिवासी लोग खतरनाक जंगली जानवरों से बचाव के लिए घर में कुत्ता पालते हैं। वे यह भी मानते थे कि कुत्ता भगवान "खंडोबा" का प्रतीक है।

F. बाघ *(पैंथेरा टाइग्रिस)*

स्वदेशी जनजातियों द्वारा बाघ को वन पारिस्थितिकी तंत्र के "राजाओं" के रूप में सम्मानित किया जाता है। लोगों का मानना है कि बाघ की आत्मा उनकी अपनी आत्मा से जुड़ी हुई है, और इस संबंध के परिणामस्वरूप उनका मानना है कि बाघ की मृत्यु होने पर वह भी जल्द ही मर जाएंगे। गोंड आदिवासी के द्वारा बाघ को बाघ देव के रूप में पूजा जाता है

IV. उपसंहार

भारत में वन क्षेत्रों में हमेशा स्थानीय जनजातियों का अस्तित्व रहा है। औद्योगिक एवं तकनीकी विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास इस दर पर न हो कि इन संसाधनों का पुनर्निर्माण सही समय पर न हो सके तथा हमारे अस्तित्व पर ही सवालिया निशान खड़ा हो जाए। यह सुनिश्चित हो कि जिस दर तथा मात्रा में हम पारिस्थितिकी के उत्पादों का उपयोग कर रहे हैं उसी दर तथा मात्रा में ये उत्पाद हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए भी उपलब्ध हों। वे हमारी तरह ही प्रकृति की सुविधाओं का सफलतापूर्वक उपयोग कर सकें ।
अपनी परंपराओं, विश्वासों और मिथकों को संरक्षित करने के लिए जनजातियों का समर्पण कई प्रजातियों के संरक्षण और संवेदनहीन पशु वध की रोकथाम के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में काम कर सकता है।

आदिवासी समुदायों में रहने वाले लोग शायद ही कभी ऐसे जानवरों का वध करते हैं जो उनके धार्मिक विश्वासों या मिथकों और लोक कथाओं से जुड़े नहीं होते हैं। हालाँकि, जनजातीय लोगों द्वारा अब तक संरक्षित की गई आनुवंशिक सामग्री अब जनजातीय क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि और मैदानी इलाकों में रहने वाले लोगों के साथ बातचीत के कारण खतरे में है, जो अस्थिर जीवन जीते हैं। इस अनुवांशिक गिरावट के परिणामस्वरूप पारंपरिक किस्मों को आगे फसल सुधार के लिए पारंपरिक किस्मों में पाए जाने वाले आनुवंशिक परिवर्तनशीलता का उपयोग करने के लिए संरक्षण के माध्यम से संरक्षित किया जाना चाहिए। भारत के कई राज्य में आध्यात्मिक, औषधीय, भोजन और मिथक उद्देश्य के आधार पर आदिवासी लोगों द्वारा मधुमक्खी, मोर, सांप आदि जैसी विभिन्न प्रजातियों का संरक्षण किया जाता है। आदिवासी लोगों के पास जादू, सजावटी या मिथक उद्देश्य के आधार पर पारंपरिक ज्ञान की विविधता है, इसके अलावा कई वन्यजीव और घरेलू जानवरों को आदिवासी लोगों द्वारा संरक्षित किया जाता है

कई आदिवासी संस्कृतियों में जानवरों को संवेदनशील प्राणियों के रूप में सम्मानित किया जाता है। जब ब्रह्मांड, पृथ्वी और मनुष्यों की उत्पत्ति की बात आती है, तो अक्सर जानवरों का एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के रूप में उल्लेख किया जाता है। अधिकांश जनजातीय लोगों के लिए, मनुष्यों और जानवरों के बीच के संबंध को एक आध्यात्मिक संबंध के रूप में देखा जाता है जिसमें दोनों पक्षों को लाभ होता है। जनजातीय लोककथाओं के लिए विभिन्न जानवरों की प्रजातियों को बेहतर ढंग से समझा और संरक्षित किया जाता है।

इस समीक्षा से, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है स्वदेशी लोग संरक्षण के अभिन्न अंग हैं क्योंकि वे इससे अधिक एकीकृत और आध्यात्मिक तरीके से जुड़ते हैं, स्वदेशी लोगों के लिए सम्मान की भावना विकसित करने की आवश्यकता है; उनकी उपस्थिति जैव विविधता के संरक्षण में मदद करती है

"इसीलिए आदिवासियों जनजातियों को जल, जंगल और जमीन के रखवाले माना जाता है"

संदर्भ

[1] अल्वेस आर.आर.एन., ओलिवेरा टी.पी.आर., मेडिरोस एम.एफ.टी. (2017): के औषधीय उपयोग का रुझान ब्राजील में खाद्य जंगली कशेरुक आधारित पूरक वैकल्पिक।मेड;8:1-22.

[2] अरोड़ा आर.के. (1991): संरक्षण और प्रबंधन अवधारणा और दृष्टिकोण प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज। (एड।) पैरोडा आर.एस. और आर.के.अरोड़ा, आईबीपीजीआर, क्षेत्रीय कार्यालय दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया, नई दिल्ली, p25।

[3] बागड़े एन. , जैन एस (2017): भारत के मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के जनजातियों और ग्रामीण लोगों द्वारा पारंपरिक और नृवंशविज्ञान संबंधी प्रथाएं। वर्ल्ड जर्नल ऑफ फार्मास्युटिकल एंड मीकल रीसर्च, (8): 263-268

[4] ग्रेवाल बी., फिस्टर ओ. (2004): ए फोटोग्राफिक हिमालय के पक्षियों के लिए गाइड। न्यू हॉलैंड प्रकाशक लिमिटेड; लंडन, यूके:।

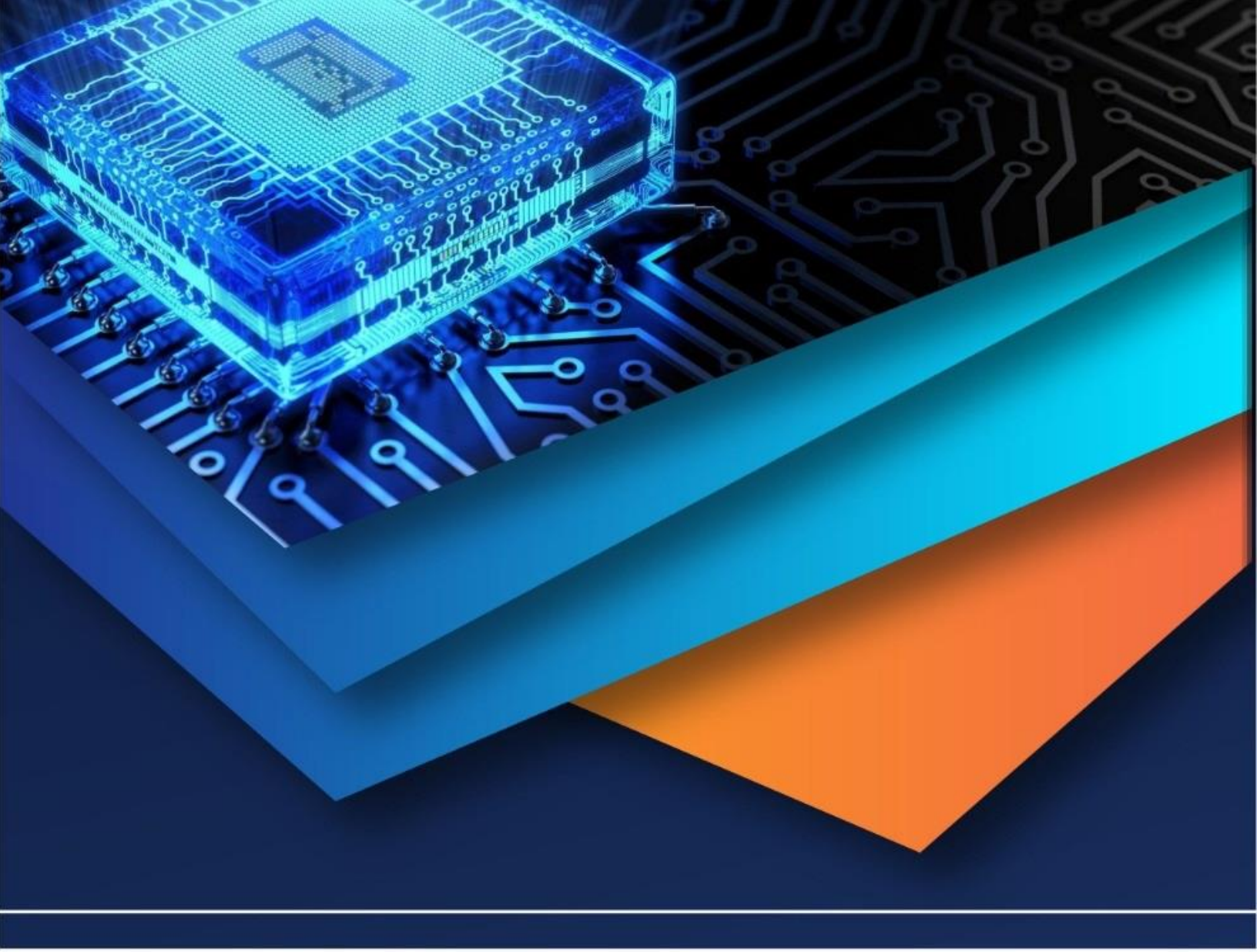
[5] सिंह आर.के., जूल्स पी., सारा पी. (2010): परंपरागत ज्ञान और जैव सांस्कृतिक विविधता: के लिए आदिवासी समुदायों से सीखना पूर्वोत्तर में सतत विकास भारत। जे. पर्यावरण. योजना.मनग.

[6] सेनगुप्ता एस. (1991): उत्तर पूर्व की जनजातियाँभारत। ज्ञान पब्लिशिंग हाउस; नया दिल्ली, भारत:

[7] नोनाका के. (2005): नृवंशविज्ञान-कीट भोजन और मानव-कीट संबंध। टोक्यो यूनिवर्सिटी प्रेस; टोक्यो, जापान:।

[8] प्रकाश एस , यादव डीके (2020): मेडिको- अनामियोट्स पर नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययन उत्तर के देवीपाटन संभाग के जीव प्रदेश, भारत। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जूलॉजिकल और एप्लाइड बायोसाइंस,:5(5):222-227

©IJRASET: All Rights are Reserved | SJ Impact Factor 7.538 | ISRA Journal Impact Factor 7.894 |



10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)